प्रायोगिक कार्य हेतु परिशिष्ठ 1

तत्कार की दुगुन, चौगुन

तत्कार की दुगुन, चौगुन आदि लयकारी भी ताल अध्याय में सिखाई गई लयकारी के समान ही की जानी है। ताल अध्याय में मूल ताल की दुगुन, चौगुन की गई है और यहाँ तत्कार के बोल, जो त्रिताल में बद्ध है, उनकी दुगुन चौगुन की जा रही है। (पैर– दां = दांया एवं बां = बांया समझें)

ठाह	ताऽ	थेई	थेई	तत्	आऽ	थेई	थेई	तत्	ताऽ	थेई	थेई	तत्	आऽ	थेई	थेई	तत्
पैर	दां	बां	दां	बां	बां	दां	बां	दां	दां	बां	दां	बां	बां	दां	बां	दां
चिन्ह	X				2				0				3			

दुगुन	ताऽथेई	थेईतत्	आऽथेइ	थेईतत्	ताऽथेई	थेईतत्	आऽथेई	थेईतत्
	X				2			
दुगुन	ताऽथेई	थेईतत	आऽथेई	थेईतत्	ताऽथेई	थेईतत्	आऽथेई	थेईतत्
	0				3			
चौगुन	ताऽथेई	आऽथेई	ताऽथेई	आऽथेई	ताऽथेई	आऽथेई	ताऽथेई	आऽथेई
	थेईतत्	थेईतत	थेईतत्	थेईतत्	थेईतत्	थेईतत्	थेईतत्	थेईतत्
	X				2			
चौगुन	ताऽथेइ	आऽथेइ	ताऽथेइ	आऽथेइ	ताऽथेइ	आऽथेइ	ताऽथेइ	आऽथेइ
	थेईतत्	थेईतत	थेईतत्	थेईतत्	थेईतत्	थेईतत्	थेईतत्	थेईतत्
	0				3			

तत्कार के पलटे

ताल–त्रिताल (16 मात्रा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
ता	थेई	थेई	तत	आ	थेई	थेई	तत	ता	थेई	थेई	तत	आ	थेई	थेई	तत
X				2				0				3			
तत्	तत्	ताऽथेई	थेईतत्	तत्	तत्	आऽथेई	थेईतत्	तत्	तत्	ताऽथेई	थेईतत्	तत्	तत्	आऽथेई	थेईतत्
तत्	तत्	तत्	तत्	ताऽथेई	थेईतत्	आऽथेई	थेईतत्	तत्	तत्	तत्	तत्	ताऽथेई	थेईतत्	आऽथेई	थेईतत्
तत्	ताऽथेई	थेईतत्	तत्	तत्	तत्	आऽथेई	थेईतत्	तत्	ततथेई	थेईतत्	तत्	तत्	तत्	आऽथेई	थेईतत्
तत्	तत्	तत्	ताऽथेई	थेईतत्	तत्	आऽथेई	थेईतत्	तत्	तत्	तत्	ताऽथेई	थेईतत्	तत्	आऽथेई	थेईतत्
तत्	तत्	तत्	तत्	तत्	तत्	ताऽथेई	थेईतत्	तत्	तत्	तत्	तत्	तत्	तत्	ताऽथेई	थेईतत्
ताथे	ईत	ताऽथेई	थेईतत्	आथे	ईत	ताऽथेई	थेईतत्	ताथे	ईत	ताऽथेई	थेईतत्	आथे	ईत	ताऽथेई	थेईतत्
ऽऽतत्	ततत्	ताऽथेऽ	ईऽताऽ	ऽऽतत्	ततत्	आऽथेऽ	ईऽताऽ	ऽऽतत्	ततत्	ताऽथेऽ	ईऽताऽ	ऽऽतत्	ततत्	आऽथेऽ	ईऽताऽ
ताऽथेई	थेईतत्	ताऽथेई	थेईतत्	ताऽथेई	थेईतत्	ऽऽतत्	ततत्	आऽथेई	थेईतत्	आऽथेई	थेईतत्	ताऽथेई	थेईतत्	ऽऽतत्	ततत्
X				2				0				3			

प्रायोगिक कार्य हेतु परिशिष्ठ 2

संगत हेतु लहरे

ताल – त्रिताल राग – चन्द्रकौंस

ग	म	ध॒	नि	सां	–	–	सां	नि	ध॒	नि	सां	नि	ध॒	म	ग॒सा
3				x				2				0			

राग – किरवानी

ग	सा	ध़॒	नि़	सा	–	–	सारे	प	पप	ध॒	प	म	ग॒	रे	ग॒म
3				x				2				0			

राग – खमाज

सां	–	नि॒	ध	–	म	प	ध	म	ग	–	सा	ग	म	प	नि
x				2				0				3			

ताल – एकताल

राग – खमाज

सां	–	नि	सां	ध	नि॒	ध	म	ग	सा	नि़	सा
x		0		2		0		3		4	

राग – बागेश्री

सां	–	नि॒	ध	म	ध	नि॒	ध	म	ग॒	रे	सा
x		0		2		0		3		4	

राग – तिलंग

ग	म	प	नि	सां	–	–	नि॒	प	म	ग	सा
3		4		x		0		2		0	

प्रायोगिक कार्य हेतु परिशिष्ठ 3

कवित्त

छंदबद्ध शब्द रचना 'कवित्त' (कविता) कहलाती है। कवित्त द्वारा नृत्य को गति दी जाती है। इसमें कविता का अंग ही अधिक होता है तथा नृत्य व तबले–पखावज के बोल कभी–कभी संलग्न होते हैं। इनमें लय–ताल का सुंदर स्वरूप भी दिखता है। प्रायः सभी देवी–देवताओं की रचनाऐं प्राप्त होती हैं पर सर्वाधिक राधा–कृष्ण के कवित्त प्रचलित हैं। पखावज वादक इसके लिये 'परन' शब्द का प्रयोग करते हैं। कवित्त भाव संप्रेषण में आसान तथा दर्शकों को प्रभावित करने में सक्षम होते हैं। ठुमरी द्वारा नृत्य में भाव अदायगी प्रस्तुत की जाती है तथा कवित्त नृत्य को गति प्रदान करते हैं। रीतिकालीन ब्रजभाषा के अनेक छंद नृत्य हेतु 'कवित्त' रचना के रूप में ग्रहण किए गए ।

1. मुरली मनोहर कृष्ण कन्हैया,
   जमुना के तट पे बिराजै हैं।
   कान में कुंडल हाथ मुरलिया
   धा मुरलिया धा मुरलिया।

2. मुरली की धुन सुन राधे आई।
   श्याम सुंदर संग छम छम नाचत।
   तिगधा दिगदिग धई तिगधा।
   दिगदिग धई तिगधा दिगदिग।

3. खम्भ फाड़ प्रहलाद उबार्‌यो
   रामचन्द्र बन रावण मार्‌यो
   गगन निवासी घट–घट वासी
   शंख चक्र अरु गदा पद्म धर
   लक्ष्मीपते नमोः– तिहाई

4. नाचत गोपाल लाल, तक्क धिकिट धेधे तड़ान
   राधा मुसकात आन, धातिरकिट धुमतिरकिट धिंनड़ान
   मुरलीधर अधर लीनी सांवरे ने एक तान
   राधिका ने नृत्य कियो, मार के कटाक्ष बान
   धिन–धिन–धिन, जात–जात तट तट तट यमुना तट
   द्रिगिन द्रिगिन नीर जात, कुंज–कुंज, भटक–भटक
   ध्रिग–ध्रिग–ध्रिग ग्वालन को, ध्रिग–ध्रिग–ध्रिग गोपिन को
   निरखे हैं जिनके नैन, गोवरधन धारी को
   धन–धन–धन भाग उनके हैं– 3 पंक्ति की तिहाई।

प्रायोगिक कार्य हेतु परिशिष्ठ 4

आमद

लखनऊ घराने की आमद– त्रिताल

धात	कथुं	गाऽ	धागे	दिगि	ताऽ	धाऽऽदिं	ऽऽताऽ	
धित्ता	किड़धा	तऽकाऽ	थुऽगा	तकिटत	काऽ	तिटकत	गदिगन	
धाऽऽति	ऽऽटऽ	धाऽऽति	ऽऽटऽ	धा	कड़नग	धाऽऽति	ऽऽटऽ	
धाऽऽति	ऽऽटऽ	धा	कड़नग	धाऽऽति	ऽऽटऽ	धाऽऽति	ऽऽटऽ	। धा

जयपुर घराने की आमद– त्रिताल

धातिटधा	तिटधाधा	तिटकिड़धा	तिटधागे	दिगिनागे	तिटकता	किड़धातिट	धातिधाऽ	
नधाऽन	धाऽकिड़धा	तिटधाति	धाऽनधा	ऽनधाऽ	किड़धातिट	धातिधाऽ	नधाऽन ।	धा

सलामी

तत्	ऽऽ	तत्	ऽऽ	ताऽ	थेई	थेई	तत्	
आऽ	थेई	थेई	तत्	तऽ	ऽत	तऽ	ऽत	
थेई	1	2	3	तऽ	ऽत	तऽ	ऽत	
थेई	1	2	3	तऽ	ऽत	तऽ	ऽत	। धा

तिहाई दार तोड़ा

तत्	तत्	थेई	तत्	तिगधाऽ	दिगदिग	थेई	ऽऽ	
तत्	तत्	थेई	तत्	तिगधाऽ	दिगदिग	थेई	ऽऽ	
तत्	तत्	थेइ	तत्	तिगधाऽ	दिगदिग	थेई	ऽऽ	
तिगधाऽ	दिगदिग	थेई	तिगधाऽ	दिगदिग	थेई	तिगधा	दिगदिग	। धा

राजस्थान के कुछ प्रसिद्ध संगीतज्ञ

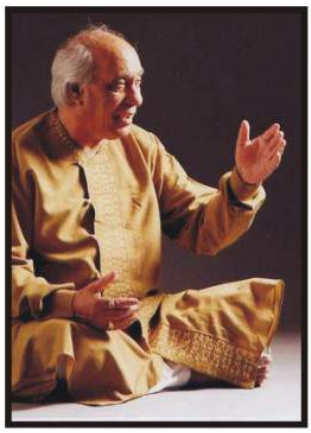

ज़िया फरीदुद्दीन डागर
ध्रुपद गायक

पं. चतुर लाल
तबला वादक

उ. सुल्तान खां
गायक एवं सारंगी वादक

पं. विश्वमोहन भट्ट
मोहन वीणा वादक

पं. कुन्दनलाल गंगानी
कथक, जयपुर शैली

जगजीत सिंह
गज़ल गायक

अल्लाजिलाई बाई
मांड गायिका

उ. साकर खां मागणियार
कमाइचा वादक

गुलाबो
सपेरा नृत्यांगना

पाठ्य क्रम में निर्धारित रागों पर आधारित कुछ प्रसिद्ध फिल्मी गीत

	गीत	गायक	फिल्म
अ.	**राग भैरव**		
1.	जागो मोहन प्यारे	लता मंगेशकर	जागते रहो
2.	मोहे भूल गये सांवरिया	लता मंगेशकर	बैजू बावरा
3.	दिल एक मंदिर है	लता मंगेशकर–मो. रफी	जदिल एक मंदिर
ब.	**राग यमन**		
1.	चंदन सा बदन	लता मंगेशकर–मुकेश	सरस्वती चन्द्र
2.	वो जब आए	लता मंगेशकर–मो. रफी	पारसमणी
3.	आंसू भरी है	मुकेश	परवरिश
4.	जब दीप जले आना	लता मंगेशकर–येशुदास	चितचोर
5.	जिया ले गयो जी मोरा	लता मंगेशकर	अनपढ़
स.	**बागेश्री**		
1.	राधा ना बोले, ना बोले	लता मंगेशकर	आज़ाद
2.	जाग दर्दे इश्क जाग	हेमन्त कुमार	अनारकली
3.	तूने ओ रंगीले कैसा	लता मंगेशकर	कुदरत
द.	**राग देशकार**		
1.	सायो नारा सायो नारा	आशा भौंसले	लव इन टोक्यो
2.	ज्योति कलश छलके	लता मंगेशकर	भाभी की चूड़ियां
3.	पंख होते तो उड़ आती रे	लता मंगेशकर	सेहरा
4.	नीले गगन के तले	महेन्द्र कपूर	हमराज
य.	**राग देस**		
1.	वंदे मातरम	पारम्परिक	
2.	ओम जय जगदीश हरे	पारम्परिक	
3.	अजी रुठ कर अब कहां	लता मंगेशकर	आरजू

भारत रत्न

एम. एस. सुब्बालक्ष्मी

कर्नाटक शास्त्रीय गायन - 1998

पं. रविशंकर

सितार वादन - 1999

उ. बिस्मिल्लाह खान

शहनाई वादन - 2001

लता मंगेशकर

पार्श्व गायन - 2001

पं. भीमसेन जोशी

हि. शास्त्रीय गायन - 2008

परिशिष्ठ

राष्ट्रगान

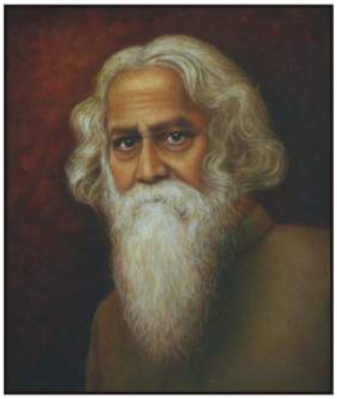

रचना : रविन्द्र नाथ टैगौर

जनगणमन–अधिनायक जय हे, भारत भाग्यविधाता ।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा, उच्छल जलधितरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशीष मांगे, गाहे तव जयगाथा।
जनगण–मंगलदायक जय हे, भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।।

(राष्ट्रगान की निर्धारित गायन अवधि 52 सैकण्ड है)

राष्ट्रगीत : वन्दे मातरम्

रचना : बंकिम चंद्र चटर्जी

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम् शस्यश्यामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्ना–पुलकित यामिनीम् फुल्लकुसुमित–द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम् सुखदां वरदां मातरम्।
सप्तकोटिकण्ठ–कल–कल–निनादकराले,
द्विसप्तकोटि भुजैर्धृतखरकरवाले,
अबला केन मा एत बले!
बहुबलधारिणीं नमामितारिणीं रिपुदलवारिणीं मातरम्।
तुमि विद्या तुमि धर्म्म, तुमि ह्रदि तुमि मर्म्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहुते तुमि मा शक्ति, ह्रदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे मन्दिरे।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी, कमला कमल–दल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नमानि त्वां, नमामि कमलाम् अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम् वन्दे मातरम् श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीम् मातरम्।